सवैया और कवित्त

2016

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

'पट-पीत', 'बनमाल' के साथ श्रीकृष्ण को और कौन-सी वस्तु बहुत अधिक प्रिय थी, जिसके उल्लेख के बिना उनका रूप वर्णन पूर्ण नहीं लगता'–स्पष्ट कीजिए। श्रीकृष्ण उसका उपयोग कैसे करते थे?

Answer:

श्रीकृष्ण के साँवले अंगों पर पीले वस्त्र और गले में वनमाल के साथ उनके माथे पर मोर का मुकुट ऐसी वस्तु है, जिसके उल्लेख के बिना उनका रूप वर्णन पूर्ण नहीं लगता।

माथे पर मोर का मुकुट एक तरफ उन्हें राजसी वैभव की चमक प्रदान करता था, तो दूसरी तरफ उन्हें समूचे ब्रज में दूल्हे का स्वरूप भी। ब्रज के दूल्हे का रूप कवि देव को और ब्रजवासियों को अत्यंत प्रिय है। श्रीकृष्ण उसका उपयोग इसी रूप में करते थे।

2015

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 2.

कवि देव ने कंजकली को क्या भूमिका सौंपी है और क्यों?

Answer:

कवि देव ने कंजकली को वसंत रूपी शिशु की नज़र उतारने की भूमिका सौंपी है। वंसत रूपी बालक को नज़र से बचाने के लिए कमल की कली रूपी नायिका बेलों रूपी साड़ी को सिर पर ओढ़कर राई-नोन रूपी पराग-कणों को छिड़क रही हैं। वसंत, कामदेव का शिशु है, कोमल है। उसे किसी प्रकार से नज़र न लगे, इसलिए कंजकली यह सब प्रक्रिया कर रही है।

2013

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 3.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।

माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग-मंदिर-दीपक सुंदर, श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई ॥

(क) कवि ने 'श्रीब्रजदूलह' शब्द किसके लिए प्रयोग किया है?

(ख) श्रीकृष्ण के पैरों और कमर में कौन-से आभूषण मधुर ध्वनि में बज रहे हैं?

(ग) सवैये के आधार पर बालकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(घ) किसे संसार रूपी मंदिर का दीपक कहा गया है? तथा क्यो?

(ङ) श्रीकृष्ण की मंद हँसी किसके समान लग रही है?

Answer:

(क) कवि ने 'श्रीब्रजदूलह' शब्द का प्रयोग 'श्रीकृष्ण' के लिए किया है।

(ख) श्रीकृष्ण के पैरों में पाजेब है, जिसके नुपूर मधुर ध्वनि कर रहे हैं और कमर में करधनी (तगड़ी) है, जिसकी ध्वनि बहुत मधुर है।

(ग) श्रीकृष्ण का सौंदर्य बहुत ही अनुपम है। उन्होंने पैरों में नुपूर तथा कमर में करधनी पहनी हुई है जिसकी ध्वनि बहुत ही मधुर है। उन्होंने पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं, गले में बनमाला सुशोभित है और माथे पर मुकुट शोभायमान है। उनके नेत्र बड़े एवं चंचल है तथा चंद्रमुख पर मुस्कुराहट चाँदनी के समान बिखरी है। वास्तव में इस अद्‌भुत सौंदर्य को धारण किए हुए वे 'ब्रज' के 'दूलहा' के रूप में दिखाई दे रहे हैं।

(घ) श्रीकृष्ण को संसार रूपी मंदिर का दीपक कहा है। जैसे मंदिर में दीपक का प्रकाश चारों तरफ फैलकर वहाँ के अंधकार को दूर करता है, वैसे ही श्रीकृष्ण का अद्‌भुत अलौकिक सौंदर्य संसार को आनंद के प्रकाश से आलोकित कर देता है।

(ङ) श्रीकृष्ण की मंद हँसी चंद्रमा की उज्ज्वल चाँदनी के समान लग रही है।

2012

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 4.

कंजकली और गुलाब बसंत रूपी शिशु के लिए क्या भूमिका निभाते हैं? कवि देव द्वारा रचित कवित्त के आधार पर लिखिए।

Answer:

कंजकली (कमल की कली) नायिका के रूप में सिर पर साड़ी ओढ़कर बसंत रूपी शिशु पर राई-नोन उतारकर उसको नज़र लगने से बचाने का उपाय करती है। प्रातःकाल गुलाब की कलियाँ चटककर खिलती हैं। उनकी चट-चट की ध्वनि ऐसे लगती है जैसे गुलाब चुटकी बजाकर वसंत रूपी बालक को जगाने का काम कर रहा है।

Question 5.

कवि देव ने 'श्रीब्रजदूलह' किसे कहा है और उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक क्यों कहा है?

Answer:

कवि देव ने श्रीकृष्ण को 'श्रीब्रजदूलह' कहा है। कवि ने उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक इसलिए कहा है क्योंकि श्रीकृष्ण का व्यापक, विराट रूपी संपूर्ण विश्व में प्रकाशवान है। उनका अलौकिक प्रकाशवान रूप सबका पथ-प्रदर्शन करने वाला है।

Question 6.

तीसरे कवित्त के आधार पर बताइए कि कवि देव ने चाँदनी रात की उज्ज्वलता और सुंदरता को किन-किन रूपों में देखा है?

Answer:

कवि देव ने चाँदनी रात की उज्ज्वलता और सुंदरता को विभिन्न रूपों में प्रकट किया है। पूर्णिमा की चाँदनी के बीच आकाश के सौंदर्य को देखकर कवि को लगता है जैसे स्फटिक शिलाओं से सँवारकर अमृत-रूप आकाश मंदिर को निर्मित कर दिया गया हो। मंदिर के आँगन में फैली हुई चाँदनी दूध के झाग के समान प्रतीत हो रही है। चाँदनी का यह उज्ज्वल रूप दही के सागर में उमड़ता हुआ दिखाई देता है। सर्वत्र फैली हुई चाँदनी से युक्त आकाश रूपी दर्पण में चंद्र रूपी राधा का प्रतिबिम्ब प्रतीत होता है। इस प्रकार चाँदनी रात बहुत ही सुंदर प्रतीत हो रही है।

Question 7.

'प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै' पंक्ति के द्वारा कवि देव क्या कहना चाहते हैं?

Answer:

'प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै'– पंक्ति में कवि देव ने बसंत को बालक रूप में चित्रण कर उसका मानवीकरण किया है। बसंत ऋतु में गुलाब सूर्य की किरणों का स्पर्श पाकर चटक उठते हैं। गुलाब के चटकने अर्थात् खिलने में कवि ने यह कल्पना की है कि गुलाब सवेरे-सवेर चुटकी बजाकर बसंत रूपी शिशु को जगा रहा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 8.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झूलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै।
पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै ॥

(क) कवि ने बसंत को किस रूप में प्रस्तुत किया है?
(ख) बसंत रूपी बालक का बिछौना कहाँ बिछा है?
(ग) राई-नोन से नज़र उतारने का क्या आशय है?
(घ) बसंत रूपी बालक ने कैसे वस्त्र धारण किए हैं?
(ङ) पवन, मोर, तोता बालक के साथ क्या क्रीडाएँ कर रहे हैं?

Answer:

(क) कवि ने बसंत को बालक के रूप में प्रस्तुत किया है।
(ख) बसंत रूपी बालक का बिछौना पेड़ की डाल पर बिछा है।
(ग) राई-नोन से नज़र उतारने का आशय है– नवजात बसंत रूपी बालक को नज़र से बँचाना। कमल-कली रूपी नायिका अपने सिर को लताओं रूपी साड़ी से ढके हुए, पराग कणों रूपी राई-नोन को उड़ा रही है। इससे ऐसे लगता है। कि वह राई-नोन से बालक की नज़र उतार रही है।
(घ) बसंत रूपी बालक ने फूलों से सुसज्जित झिंगोला पहन रखा है।
(ङ) पवन बालक बसंत के पालने को झुला रहा है। मोर और तोता बसंत रूपी बालक से बातें कर रहे हैं।

2011

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 9.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग-मंदिर-दीपक सुंदर, श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई ॥

(क) श्री कृष्ण ने कौन-कौन से आभूषण कहाँ पहन रखे हैं?
(ख) ब्रजदूलहा किसे कहा गया है?
(ग) 'मुख चंद', 'जग-मंदिर-दीपक' में कौन-सा अलंकार निहित है?
(घ) सवैए में कृष्ण की वेशभूषा क्या है?
(ङ) सवैए में प्रयुक्त भाषा कौन-सी हैं?

Answer:

(क) श्रीकृष्ण ने पैरों में नुपूर, कमर में करघनी एवं माथे पर मुकुट पहन रखा है।
(ख) श्रीकृष्ण को 'ब्रजदूलह' कहा गया है।
(ग) 'मुख-चंद' एवं 'जग-मंदिर-दीपक' में रूपक अलंकार है।
(घ) श्रीकृष्ण के साँवले शरीर पर पीले वस्त्र शोभायमान हैं। उन्होंने सिर पर मोर का मुकुट, कमर में करधनी एवं पाँवों में नुपूर पहने हुए हैं तथा उनके गले में बनमाला सुशोभित है।
(ङ) सवैए में 'ब्रजभाषा' प्रयुक्त है।

Question 10.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग–मंदिर–दीपक सुंदर, श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई ॥

(क) कृष्ण के किन-किन आभूषणों से मधुर ध्वनि आ रही है?
(ख) कृष्ण के मुख की उपमा किससे दी गई है?
(ग) इस पद में ब्रजदूलह किसे कहा गया है?
(घ) यह काव्यांश किस छंद में लिखा गया है?
(ङ) 'जग-मंदिर-दीपक' में कौन-सा अलंकार है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) श्रीकृष्ण के पैरों में धारण की हुई पाजेब एवं कमर में पहनी हुई करधनी से मधुर ध्वनियाँ आ रही हैं।
(ख) श्रीकृष्ण के मुख की उपमा चंद्रमा से दी गई है।
(ग) इस पद में ब्रजदूलह 'श्रीकृष्ण' को कहा गया है।
(घ) यह काव्यांश सवैया छंद में लिखा गया है।
(ङ) 'जग-मंदिर-दीपक' में रूपक अलंकार है।

2010

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 11.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग-मंदिर-दीपक सुंदर, श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई ॥

(क) यह काव्यांश किस भाषा में रचा गया है?
(ख) 'अनुप्रास' अलंकार का एक उदाहरण चुनकर लिखिए।
(ग) 'जग-मंदिर-दीपक' का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।
(घ) 'मुख-चंद-जुन्हाई' में कौन सा अलंकार है?
(ङ) काव्यांश किस छंद में लिखा गया है?

Answer:

(क) यह काव्यांश ब्रजभाषा में रचा गया है।
(ख) 'कटि किंकिनि', 'हिये हुलसै'– अनुप्रास अलंकार।
(ग) 'जग-मंदिर-दीपक' पंक्ति में श्री कृष्ण को संसार रूपी मंदिर का दीपक कहा है। जिस प्रकार दीपक के प्रकाशित होने पर मंदिर में उजाला फैल जाता है। उसी प्रकार श्री कृष्ण के होने से ब्रज में उमंग, आनंद और प्रकाश फैल जाता है। उनका व्यक्तित्व इतना विराट एवं व्यापक है कि उनके प्रकाशवान अलौकिक स्वरूप संपूर्ण विश्व दीप्तिमान है।
(घ) 'मुख-चंद-जुन्हाई' में रूपक अलंकार है।
(ङ) काव्यांश 'सवैया' छंद में लिखा गया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 12.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झुलावै, केकी-कीर, बतरावैं 'देव',
कोकिल हलावै–हुलसावै कर तारी दै ॥
पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै ॥

(क) बसंत को मदन महीप का बालक क्यों कहा गया है? उसका पलना, बिछौना और झिंगूला किन्हें कहा गया है?

(ख) उस बालक को झुलाने, बतराने और हुलसाने का कार्य कौन, कैसे संपन्न कर रहे हैं?

(ग) 'राई नोन' उतारने की क्रिया क्यों की जाती है? यहाँ यह क्रिया किसके द्वारा संपन्न की जा रही है?

Answer:

(क) बसंत को मदन महीप अर्थात् कामदेव का बालक इसलिए कहा है क्योंकि कामदेव सौंदर्य का देवता है और बसंत के आगमन पर संपूर्ण प्रकृति सौंदर्य से भर गई है। कोमल पत्तों, पुष्पों से हरा-भरा, रंग-बिरंगा सौंदर्य का साम्राज्य फैल गया है। इसलिए बसंत कामदेव के शिशु के समान सुंदर प्रतीत हो रहा है। पेड़ों की डालियाँ इस बसंत रूपी शिशु का पालना है। नई-नई कोमल पत्तियां उसका बिछौना है और सुंदर फूल उसका झिंगूला हैं।

(ख) उस बालक को झुलाने का कार्य मंद-मंद बहने वाली पवन कर रही है। मोर और तोता उससे बातें कर रहे हैं तथा कोयल बालक को हिलाकर तथा ताली बजाकर प्रसन्न कर रही है।

(ग) 'राई नोन' उतारने की क्रिया नवजात-शिशु की नज़र उतारने के लिए की जाती है। यहाँ पर कंजकली (कमल की कली) नायिका लताओं की साड़ी सिर पर ओढ़े बसंत रूपी शिशु की नज़र उतारने के लिए राइ-नोन रूपी पराग-कणों को उड़ा रही है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 13.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधरित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झुलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै ॥
पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै ॥

(क) यह काव्यांश किस भाषा में रचा गया है?

(ख) काव्यांश में किस छन्द का प्रयोग हुआ है?

(ग) पूरे पद में कौन-सा अलंकार प्रधान रूप से प्रयुक्त हुआ है?

(घ) राई नोन उतारने के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है?

(ङ) पद में प्रयुक्त अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

Answer:

(क) यह काव्यांश ब्रजभाषा में रचा गया है।

(ख) काव्यांश में कवित्त छंद का प्रयोग किया गया है।

(ग) पूरे कवित्त में अनुप्रास अलंकार प्रधान रूप से प्रयुक्त हुआ है।

(घ) राई नोन उतारने के बारे में कवि ने यह कल्पना की है कि कंजकली (कमल की कली) रूपी नायिका अपने सिर को लताओं की साड़ी से ढके हुए पराग-कणों को उड़ाती हुई बसंत रूपी बालक की नज़र उतार रही है। वह नवजात बालक-बसंत को नज़र से बचाना चाहती है।

(ङ) 'मदन महीप', 'बालक बसंत'– अनुप्रास अलंकार का उदाहरण है।

Question 14.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

फटिक सिलानि सौं सुधार्‌यौ सुधा मंदिर,
उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगे अमंद।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बाहर ते भीतर लौं भीति न दिखैए 'देव',
दूध को सो फेन फैल्यो आँगन फरसबंद।
तारा-सी तरुनि तामें ठाढ़ी झिलमिली होति
मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरंद।
आरसी से अंबर में आभा सी उजारी लगै,
प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद ॥

(क) काव्यांश के छन्द का नाम लिखिए।

(ख) यह पद्यांश किस भाषा में रचा गया है?

(ग) काव्यांश में चंद्रिका के सौन्दर्य को किस प्रकार चित्रित किया गया है?

(घ) कविता से उपमा अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।

(ङ) अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण चुनकर लिखिए।

Answer:

(क) काव्यांश के छंद का नाम 'कवित्त' है।

(ख) यह काव्यांश ब्रजभाषा में लिखा गया है।

(ग) चाँदनी के सौंदर्य को कवि ने बहुत ही सुंदर अभिव्यक्ति दी है। पूर्णिमा की रात्रि में चारों तरफ़ छिटक रही चाँदनी आकाश के सौंदर्य को बढ़ा रही है। स्फटिक शिलाओं से सँवार कर अमृत-रूप आकाश-मंदिर की सुंदर कल्पना इस चाँदनी की शोभा का अभिन्न अंग है। जिसे देखकर ऐसा लगता है, जैसे– दही का सागर उमड़ता चला आ रहा है। इस मंदिर में बाहर-भीतर कोई दीवार नहीं है। दूर-दूर तक फैला हुआ चाँदनी का विस्तृत रूप दूध के झाग के समान प्रतीत हो रहा है। इस तरह चंद्रमा की फैली चाँदनी अनुपम दृश्य की सृष्टि कर रही है

(घ) 'तारा सी तरुनि तामें ठाढ़ी झिलमिली होति'– उपमा अलंकार का उदाहरण है।

(ङ) प्रथम पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

2009

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 15.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झूलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै ॥
पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै ॥

(क) प्रस्तुत पद में वसंत को किसका राजकुमार कहा है और क्यों?

(ख) राई नोन उतारने का क्या आशय है? राजकुमार पर राई नोन कौन, कैसे उतारता है?

(ग) बालक वसंत को झूले में झुलाने और बाल-क्रीड़ाएँ कराने का काम कैसे संपन्न होता है?

Answer:

(क) प्रस्तुत पद में वसंत को कामदेव का राजकुमार कहा है क्योंकि वसंत के आते ही प्राकृतिक सौंदर्य अपने यौवन पर दिखाई देता है। डालों के ऊपर नवकिसलय, नवीन पत्र दिखाई देते हैं। सुगंधित कुसुम सभी दिशाओं को सुगंधमय कर देते हैं। कोयल की मीठी कूक सुनाई देती है। प्रकृति के इन सब कोमल उपादानों को देखकर लगता है जैसे किसी नन्हें राजकुमार का अभिनंदन हो रहा है।

(ख) राई-नोन उतारने का आशय है 'नज़र उतारना'। कमल-कली रूपी नायिका लताओं की साड़ी से सिर ढककर पराग-कणों से कामदेव के राजकुमार वसंत की नज़र उतार रही है, ताकि बुरी नज़र से उसका बचाव हो सके।

(ग) मोर व शुक वसंत राजकुमार से बातें करते हैं, पवन उसे झूला झुलाती है। कोयल करतल ध्वनि से उसे प्रसन्न करती है। गुलाब के फूल प्रातः चुटकी बजाकर उसे जगाते हैं। बालक वसंत पेड़ की शाखा के पालने में प्रसन्न है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 16.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

फटिक सिलानि सौं सुधार्‌यौ सुधा मंदिर,
उदधि दधि को सो अधिकाइ उमगे अमंद।
बाहर ते भीतर लौं भीति न दिखैए 'देव',
दूध को सो फेन फैल्यो आंगन फरसबंद।
तारा सी तरुनि तामें ठाढ़ी झिलमिली होति,
मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरंद।
आरसी से अंबर में आभा सी उजारी लगै,
प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद ॥

(क) सुधा मन्दिर किस प्रकार की शिलाओं से बना हुआ है? वह किसकी तरह प्रतीत हो रहा है?

(ख) सुधा मन्दिर के आँगन और वहाँ खड़ी सुंदरी के बारे में क्या कल्पना की गई है?

(ग) 'आरसी से अंबर में आभा सी उजारी लगै,
प्यारी राधिका को प्रतिबिम्ब सो लगत चंद ॥'
काव्य-पंक्तियों का आशय समझाइए।

Answer:

(क) सुधा मंदिर स्फटिक शिलाओं को तराशकर बनाया गया है। इस मंदिर को देखकर ऐसा लगता है जैसे दही का सागर उमंग व उत्साह से उमड़ रहा है। इस मंदिर में बाहर से भीतर तक कोई दीवार दिखाई नहीं देती।

(ख) आकाश मंदिर के प्रांगण में दूध की झाग सब ओर फैली हुई हैं जिसे देखकर ऐसा लगता है जैसे मोतियों की ज्योति व मल्लिका के फूलों के रस से सुशोभित सफेद फ़र्श के बीच तारा के समान युवती खड़ी झिलमिला रही है।

(ग) आकाश दर्पण के समान स्वच्छ व निर्मल है उसमें चाँद खिला है। कवि ने चाँद में राधा की कल्पना की है। जिस प्रकार राधा अनेक गोपियों के बीच प्रकाश पुंज के समान प्रतीत होती है उसी प्रकार चाँद अनेक तारों के बीच अपनी अलवा छटा निखेर रहा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 17.

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसैं पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग-मंदिर-दीपक सुंदर, श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई ॥

(क) काव्यांश की भाषा कौन-सी है?
(ख) उक्त पंक्तियाँ किस छंद में लिखी गई हैं?
(ग) 'कटि किंकिनि के धुनि की मधुराई' में कौन-सा अलंकार है?
(घ) 'जग-मंदिर-दीपक' किसे कहा गया है?
(ङ) रूपक अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।

Answer:

(क) काव्यांश की भाषा 'ब्रज' है।
(ख) उक्त पंक्तियाँ 'सवैया' छन्द में लिखी गई हैं।
(ग) 'क' वर्ण की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।
(घ) यह संसार एक मंदिर के समान है। श्रीकृष्ण उस मंदिर में प्रज्वलित दीपक के समान हैं। कृष्ण सबसे अधिक सुंदर व उज्ज्वल होने के कारण संसार-रूपी मंदिर के दीपक प्रतीत होते हैं। उनके प्रकाश में सभी का मार्ग प्रशस्त होता है।
(ङ) 'जय जग-मंदिर-दीपक सुंदर' में रूपक अलंकार है।

Question 18.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झूलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै ॥

(क) उक्त पंक्तियाँ किस भाषा में लिखी गई हैं?
(ख) उक्त पंक्तियों में छंद कौन-सा है?
(ग) 'केकी-कीर बतरावै' में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए।
(घ) हवा, मोर, तोता और कोयल की क्या भूमिका दिखाई गई है।
(ङ) रूपक अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) उक्त पंक्तियाँ ब्रज भाषा में लिखी गई हैं।

(ख) उक्त पंक्तियों में मानवीकरण अलंकार है।

(ग) 'केकी-कीर बतरावै' में अनुप्रास अलंकार है।

(घ) हवा बालक बसंत को पालने में झुला रही है और मोर, तोता उससे बातें कर रहे हैं। कोयल बालक को हिला रही है और प्रसन्नता से ताली बजा रही है।

(ङ) 'डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के' में रूपक अलंकार है।

Question 19.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै ॥

(क) उक्त काव्यांश किस भाषा में रचित है?

(ख) उक्त पंक्तियाँ किस छंद में लिखीं गई हैं?

(ग) रूपक अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।

(घ) बसंत रूपी बालक की नज़र कैसे उतारी जा रही है?

(ङ) बालक बसंत को नींद से जगाने के अंदाज़ पर टिप्पणी कीजिए।

Answer:

(क) उक्त काव्यांश ब्रज भाषा में लिखा गया है।

(ख) उक्त पंक्तियाँ सवैया छंद में लिखीं गई हैं।

(ग) 'कंजकली नयिका लतान सिर सारी दै' में रूपक अलंकार है।

(घ) कमल-कली रूपी नयिका अपने सिर को लताओं की साड़ी से ढके पराग-कणों को उड़ा रही है। इसे देखकर ऐसा लगता है जैसे वह राई-नमक से बालक की नज़र उतार रही हो।

(ङ) राजा कामदेव के बालक को प्रातः गुलाब चुटकी बजाकर जगा रहा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in